## पद ९२ (हिंदी)

(राग: हमीर कल्याण - ताल: त्रिताल)

भज मन रेवणसिद्ध अवधूता।।ध्रु.।। माथा जटा वाघांबर ओढे। अंग चढाय बभूत।।१।। त्रिशूल हात धरे बिजया चढाये। आरक्त नयन अद्भुत।।२।। माणिक कहे वाको सुमरन करत। कंप छुटे जमदूत।।३।।